इश्के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ईमान का तक़ाज़ा है

डॉ. रफ़ीक अहमद

इश्के रसूल सल्ल0 ईमान का तकाज़ा है

बिसमिल्लाहर्रहमानर्रहीम

ईमान का तक़ाज़ा है कि नबी सल्ल० से गहरी मुहब्बत हो। वह दिल जो आप सल्ल० की मुहब्बत से खाली हो वीरान घर की तरह है। अहले ईमान के लिये ज़रूरी है कि आप सल्ल० की पाकीज़ा ज़ात से सिर्फ़ क़ानूनी ताल्लुक़ ही नहीं बल्कि जज़्बाती ताल्लुक़ भी हो और यह ताल्लुक़ और लगाव इस क़दर मज़बूत हो कि इन्सान अपनी जान से भी ज़्यादा आप सल्ल० की ज़ात को प्रिय और महबूब रखे। इरशादे रसूल सल्ल० है "ख़ुदा की क़सम तुम मोमिन नहीं हो सकते जब तक कि मैं तुम्हें अपने माँ-बाप अपने बच्चों और दुनिया के तमाम इन्सानों से ज़्यादा महबूब न हो जाऊं" (बुख़ारी) अब्दुल्लाह बिन हश्शाम बयान करते हैं हम नबी करीम सल्ल० के साथ थे, आप सल्ल० हज़रत उमर रज़ि० का हाथ पकड़े हुए थे। हज़रत उमर रज़ि० ने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० आप मुझे सबसे ज़्यादा महबूब हैं सिवाए मेरी जान के। रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया कि उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़ये व क़ुदरत में मेरी जान है तुम मोमिन नहीं हो सकते जब तक कि मैं तुम्हारी जान से ज़्यादा महबूब न हो जाऊं, हज़रत उमर रज़ि० ने फ़ौरन अर्ज़ किया कि हुज़ूर अब तो आप मुझे अपनी जान से भी ज़्यादा महबूब हैं। आप सल्ल० ने फ़रमाया कि अब तुम्हारा ईमान मुकम्मल हुआ ।(बुख़ारी)

ऊपर की हदीस में अहले ईमान से यही मांग है कि वह अपने माँ–बाप, रिश्तेदारों, दोस्तों व साथियों और दूसरे सारे लोगों की मुहब्बत पर आप सल्ल० की मुहब्बत को गालिब रखें। यहाँ तक कि अपने नफ़्स और जान की मुहब्बत को भी पैग़म्बरे इस्लाम सल्ल० की मुहब्बत पर क़ुरबान कर दे और अपनी ज़िन्दगी को रसूल सल्ल० के बताऐ हुऐ तरीक़े पर ढाल ले। ज़रा ग़ौर कीजिये कि मोमिन होने के लिये मुहब्बते रसूल सल्ल० की शर्त क्यों है। क्या रसूल सल्ल० हमारी मुहब्बत की तलब रखते हैं? नहीं, हरगिज़ नहीं, आप सल्ल० हमारी मुहब्बत से बेनियाज़ (निस्पृह) हैं। अस्ल में हम अहले ईमान की सी ज़िन्दगी गुज़ार ही नहीं सकते जब तक दूसरी सारी मुहब्बतें और वफ़ादारियां इसी मर्कज़े मुहब्बत व वफ़ादारी के ताबेअ (अधीन) न हो जाऐं क्योंकि इताअत और पैरवी उसी की होती है जो सबसे ज़्यादा महबूब हो।

एक हदीस के अल्फ़ाज़ हैं कि ख़ुदा की क़सम तुम मोमिन नहीं हो सकते जब तक कि तुम्हारा नफ़्स मेरी लाई हुई शरीअत के अधीन न हो जाऐ (अल अरबईन अलनवविया) इस हदीस में महबूबियत और दिली ताल्लुक को परखने का आसान तरीक़ा बताया गया कि अगर हमारा नफ़्स आप सल्ल० की लाई हुई शरीअत को बे चूं चरा क़ुबूल करले तो यह ईमान की अलामत है और अगर उसे क़ुबूल करने में झिझक महसूस करे और किसी दूसरे के क़ौल और कथन, ख्वाहिश और मांगें या खुद अपने नफ़्स के तक़ाज़े पूरा करे तो यह सिफ़त सच्चे ईमान की नहीं बल्कि दिखावटी ईमान की है, और दावाये मुहब्बत को झुठलाने की अलामत (लक्षण) है। क्योंकि यह मुम्किन ही नहीं है कि हम वफ़ादार

एक के हों और बात दूसरे की मानें, मुहब्बत किसी से करें और माँगे किसी और की पूरी करें। यह बात किसी दलील की मोहताज नहीं है कि हम जिस की भी मांगें पूरी कर रहे हैं चाहे वह हमारा नफ़्स हो, माँ-बाप हों, या दोस्त और साथी हों वही हमारा महबूब है। इसीलिये रसूल सल्ल० ने अपनी मुहब्बत को सबसे ऊपर रखना शर्ते ईमान ठहराया है, क्योंकि इसके बग़ैर इताअत और पैरवी मुम्किन ही नहीं। इरशादे खुदाबन्दी है ''ऐ ईमान वालो अल्लाह की इताअत (आज्ञापालन) करो और रसूल की इताअत करो और (नाफरमानी करके) अपने आमाल बर्बाद न करो। (सूरह मुहम्मदः 33)

दूसरे मुक़ाम पर क़ुरआन में इरशाद होता है ''ऐ नबी सल्ल० आप कह दीजिये अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत रखते हो तो मेरी पैरवी करो ताकि अल्लाह तुमसे मुहब्बत करे और तुम्हारे गुनाहों को माफ़ करदे अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला और मेहरबान है।

(आले इमरान 31)

इताअते रसूल सल्ल० ही सच्चे रास्ते और हिदायत की कुंजी है, यही वह अचूक दवा है जिससे लाग़र मरीज़ सेहतमन्द हो जाता है। अल्लाह तआला ने अपनी रहमत का हक़दार उन्हीं लोगों को ठहराया है जो इताअते रसूल सल्ल० में गम्भीर होते हैं, क़ुरआन में इरशाद है ''और मेरी रहमत शामिल है हर चीज़ को सो उसको लिख दूंगां उनके लिये जो परहेजगार हैं और ज़क़ात अदा करते हैं और जो हमारी बातों पर यक़ीन रखते हैं और वह लोग जो पैरवी करते हैं उस रसूल सल्ल० की जो उम्मी हैं। (अल आराफ़ः 156)

यही वजह थी कि सहाबा-ए-कराम रज़ि० ने अपनी ज़िन्दगी इताअते रसूल सल्ल० में गुज़ारी और हर काम में अल्लाह व उसके रसूल सल्ल० की फ़रमांबरदारी का पूरा ख्याल रखा, जिसकी वजह से उनको न जान की परवाह थी और न माल का ख्याल था, न किसी तकलीफ़ का एहसास था और न ही मौत का खौफ़। सहाबा रज़ि० को जो आस्था और अक़ीदत, मुहब्बत और लगाव रसूलुल्लाह सल्ल० से था उसकी मिसाल दुनिया पेश करने से असमर्थ है मौलाना अहमद रज़ा बरेलवी रह० ने ख़ूब कहा है।

हुस्ने यूसुफ़ में कटीं मिस्र में अन्गुश्त ज़नां
सर कटाते हैं तेरे नाम पे मर्दाने अरब

सहाबा-ए-कराम रज़ि० की जाँ निसारी, इश्क़ व मुहब्बत और इताअते रसूल सल्ल० के चन्द वाक़ियात मुलाहेज़ा हों ताकि उसकी रोशनी में हम अपने दावाये ईमान और आशिके रसूल सल्ल० होने का जायज़ा ले सकें।

❖ जब अबू बक्र रज़ि० ने मस्जिदे हराम में पहला तबलीग़ी खुतबा देना शुरू किया तो चारों तरफ से कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन उन पर टूट पडे। इस तरह मारा कि तमाम चेहरये मुबारक ख़ून से रंगीन हो गया। आप बेहोश हो गये किसी को यह यक़ीन न था कि हज़रत अबू बक्र रज़ि० इस जान लेवा हमले से ज़िन्दा बच जायेगें। शाम तक हज़रत अबू बक्र रज़ि० को बेहोशी रही। शाम को बार-बार आवाज़ देने पर बोले तो सबसे पहला लफ्ज़ यह था कि हुज़ूर के क्या हाल हैं, उनकी माँ जो उनके सिरहाने ही मौजूद थीं उन्होंने फ़रमाया कि मुझे तो कोई ख़बर नहीं। आप रज़ि० ने फ़रमाया कि उम्मे जमील रज़ि० के पास जाकर मालूम करो। वह बेचारी बेटे की मुहब्बत में उम्मे जमील रज़ि० के पास गयीं, उन्होंने

ख़ैरियत सुनाई और कहा कि वह बिल्कुल ठीक हैं तब उनकी माँ ने कहा कि बेटे कुछ खा लो या दूध पी लो, तो आप रज़ि० ने फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम मैं उस वक़्त तक कोई चीज़ न खाऊँगा और न पियूंगा जब तक हुज़ूर को अपनी आँखों से न देख लूँ। (नबीये रहमत सल्ल० सय्यद अबुल हसन अली नदवी रह०)

दर हक़ीक़त नबी सल्ल० के इन (जां निसारों करने वाले सहाबियों) ने अपनी जान क़ुर्बान कर पूरा सुबूत दे दिया। ज़ख़्मों पर ज़ख़्म खाते रहे मगर क्या मजाल कि कोई घबराहट कोई परेशानी लाहक़ हो जाए। आप सल्ल० से बे पनाह मुहब्बत और क़ुर्बानी का यही जज़्बा था कि सहाबा का ईमान इस क़द्र कामिल था कि आप सल्ल० के आदेशों को बग़ैर किसी नागवारी के क़ुबूल करते थे आप सल्ल० के चेहरये मुबारक पर ज़रा सी भी शिकन सेपरेशान हो जाते थे कि कहीं हमारे अमल में कोई कोताही तो नहीं हुई है।

❖ हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० कहते हैं कि एक मौक़े पर आप सल्ल० के वुज़ू का बचा हुआ पानी मैंने ले लिया, फिर सहाबाए कराम रज़ि० उसे लेने के लिये दौड़ पड़े जिसे जो कुछ मिला अपने बदन पर मल लिया और जो कुछ नहीं पा सका उसने दूसरे के हाथ से तरी ही ले ली। (बुख़ारी)

❖ हज़रत उमर रज़ि० अपने दौराने ख़िलाफत में हज़रत अब्बास रज़ि० के घर के करीब से गुज़र रहे थे, बारिश का कुछ गन्दा पानी हज़रत अब्बास के मकान की छत में लगे परनाले से गिरने लगा, जिससे गन्दे पानी की कुछ बूदें उनके कपड़ों पर भी पड़ीं और कपड़े गन्दे हो गये, वह मस्जिद तशरीफ़ ले गये वहाँ अपने कपड़ों को धोया फिर हुक्म दिया कि परनाला वहां से उखाड

दिया जाये ताकि रास्ता चलने वालों को तकलीफ़ न पहुंचे। परनाला उखाड़ दिया गया, जब हज़रत अब्बास रज़ि० को इसकी ख़बर मिली तो उन्होंने हज़रत उमर रज़ि० से कहा कि आपने मेरा परनाला उखाड़ दिया है हालांकि जिस जगह पर यह लगा था वहां इसे रसूलुल्लाह सल्ल० ने खुद ही अपने हाथों से लगाया था। यह सुनते ही हज़रत उमर रज़ि० रो पड़े और हज़रत अब्बास रज़ि० से फ़रमाया तुम अपने हाथों से इसको उसी मुक़ाम पर लगा दो और सीढ़ी उमर को बनाओ। चुनांचे हज़रत अब्बास रज़ि० ने हज़रत उमर रज़ि० के कन्धों पर पैर रखकर परनाला वहां पर लगा दिया जहां आप सल्ल० ने लगाया था। (बैहक़ी)

❖ हिजरत की रात मुश्रिकीन ने आपके मकान को घेर रखा था, आप सल्ल० को क़त्ल कर देना चाहते थे उस रात आप सल्ल० ने हज़रत अली रज़ि० से फ़रमाया तुम मेरे बिस्तर पर लेट जाओ, ख़ौफ़ न करना, मैं मदीना जा रहा हूँ, मक्का के फ़लाँ-फ़लाँ की अमानतें मेरे पास रखी हैं उन्हें उनके हवाले करके तुम भी मदीना चले आना। हज़रत अली रज़ि० ने खुशी-खुशी क़ुबूल कर लिया हालांकि उस रात आपके बिस्तर पर सोना अपनी मौत को दावत देना था।

❖ हिजरत के सफ़र में अचानक ऐसा हुआ कि हज़रत अबू बक्र रज़ि० आपके आगे चलने लगे। थोड़ी देर बात आपके दायें आ गये, फिर बायें आ गये और अचानक आप सल्ल० के पीछे चलने लगे। आप सल्ल० ने फ़रमाया, अबू बक्र ये क्या कर रहे हो? कभी आगे आ जाते हो, कभी पीछे, कभी दायें चलने लगते हो और कभी बायें, हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने जवाब दिया, या रसूलुल्लाह सल्ल० जब मुझे ख़तरा महसूस होता है कि दुश्मन आपके आगे से न आ रहा हो तो मैं आपके आगे आ जाता हूँ, और जब यह महसूस होता है कि दुश्मन आपके दायें पहुंच जाये

तो आपके दायें आ जाता हूं, जब डरता हूँ कि दुश्मन बायें जानिब से आप पर हमला न कर दे तो बायें पहुंच जाता हूँ और जब पीछे से हमला होने का खतरा महसूस करता हूँ तो आप के पीछे पहुंच जाता हूँ ताकि कोई तकलीफ़ पहुचें तो मुझे पहुचें आप उससे सुरक्षित रहें। (मिश्कात)

❖ जब सौर नामक गुफ़ा में आप दुश्मनों से छुपने के लिये दाख़िल होना चाहते थे तो हज़रत अबू बक्र रज़ि० पहले अन्दर जाकर उसको साफ किया, अपनी चादर फाड़ कर सारे सूराखों को बन्द किया ताकि कोई कीड़ा-मकोड़ा रसूलुल्लाह को तकलीफ़ न पहुंचा दे। आप गारे सौर में दाख़िल हुये और हज़रत अबू बक्र रज़ि० की गोद मे सर रख कर सो गये। दो सूराख बाकी बचे थे तो उसमें उन्होंने पैर लगा दिया था। थोड़ी देर बाद किसी ज़हरीले कीड़े ने काट लिया। भयानक तकलीफ़ के बावजूद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रज़ि० इस खौफ़ से हिले तक नहीं कि कहीं उनके हिलने-डुलने से आप सल्ल० की नींद न खुल जाये। जब तकलीफ़ की वजह से हज़रत अबू बक्र रज़ि० की आँखों से आंसू बहने लगे और आप सल्ल० की नींद खुल गयी तो आप सल्ल० ने पूछा अबू बक्र क्या बात है तो उन्होंने जवाब दिया, या रसूलुल्लह मेरे माँ-बाप आप पर कुर्बान हो मुझे किसी जहरीले कीड़े ने काट लिया है तो आपने अपना लुआब (saliva) उस जगह लगा दिया जिससे ज़हर का असर ख़त्म हो गया। (मिश्कात)

❖ हज़रत खुबैब रज़ि० को इस्लाम क़ुबूल करने के जुर्म में सूली पर लटका दिया गया, दुश्मने रसूल ने उन्हें बहुत ही बेर्ददी के साथ क़त्ल किया। वह सूली पर लटके हुये थे इसी हालत में एक कठोर दिल दुश्मने रसूल ने उनके सीने पर भाला मारा और पूछा, क्या तुम पसन्द करते हो कि तुम्हारी जान बच जाये और तुम्हारी जगह मुहम्मद (सल्ल०) को खड़ा कर दिया जाये तो

उन्होंने जवाब दिया, ख़ुदा की कसम मुझे यह भी गवारा नही है कि मुझे छोड़ दिया जाये और इसके बदले हज़रत मुहम्मद सल्ल० के पैर में एक मामूली कांटा भी चुभ जायें। (सीरते इब्ने हश्शाम)

❖ एक बार आप सल्ल० ने फ़रमाया कि जो शख्स इस बात की ज़मानत दे कि वह लोगों से सवाल नहीं करेगा तो मैं उसके जन्नती होने की ज़मानत देता हूँ, हज़रत सौबान रज़ि० ने कहा मैं उसके लिये हाज़िर हूँ। चुनांचे उसी वक्त से उन्होंने यह अपना यह तरीक़ा बना लिया था कि वह किसी से सवाल नहीं करते थे यहाँ तक कि अगर सवारी से कोड़ा गिर जाता तो ख़ुद उतर कर उठा लेते थे मगर किसी से उठाने के लिये नहीं कहते थे।

❖ हज़रत अबू बक्र रज़ि० कहा करते थे कि जब मैं भूखा होता हूँ और आप सल्ल० को देख लेता हूँ तो आसूदा (पेट भरा हुआ) हो जाता हूँ, मुझे खाने की ख्वाहिश नहीं होती और जब प्यासा होता हूँ और चेहरये अनवर पर निगाह पड़ जाती है तो प्यास बुझ जाती है, मुझे पानी पीने की ज़रुरत नहीं महसूस होती है।

❖ जब हज़रत ज़ैद को हरम से बाहर क़त्ल के लिये ले जाया गया उस वक्त क़ुरैश के बहुत से लोग इकटठा थे जिनमें हज़रत अबू सुफ़ियान रज़ि० भी थे, तो उन्होंने हज़रत ज़ैद रज़ि० से कहा कि मैं तुमसे क़सम दिला कर पूछता हूँ कि क्या तुम यह पसन्द करोगे कि तुम आराम से अपने घर वालों में रहो और तुम्हारी जगह मुहम्मद सल्ल० हों। उन्होंने जवाब दिया कि मैं यह भी सहन बर्दाश्त नहीं कर सकता कि मैं अपने घर में आराम से रहूँ और

मुहम्मद सल्ल० को एक कांटा भी चुभ जाए। अबू सुफियान रज़ि० ने उस पर कहा कि मैंने किसी से इतनी मुहब्बत करते नहीं देखी जितना मुहम्मद सल्ल० के साथी करते हैं। उसके बाद उनको शहीद कर दिया गया। (सीरत इब्ने हश्शाम)

❖ एक सहाबी हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुए और फ़रमाया कि आप सल्ल० की मुहब्बत मुझे मेरी जान व माल और बीवी–बच्चों से ज़्यादा है जब मैं अपने घर में होता हूँ और आप सल्ल० का ख़्याल आ जाता है तो सब्र नही कर पाता हूँ, यहाँ तक कि हाज़िर हो कर आप सल्ल० को देख न लूँ मुझे यह फ़िक्र रहती है कि मौत तो आप को भी और मुझे भी ज़रूर आनी है, उसके बाद आप सल्ल० तो नबियों के दर्जे में चले जाऐंगे। मुझे यह ख़ौफ़ रहता है कि फिर मैं आप सल्ल० को न देख सकूंगा। इसके जवाब में आप सल्ल० ने खामोशी फ़रमाई। इतने ही में हज़रत जिब्राइल तशरीफ़ लाऐ और यह आयत सुनाई। तर्जुमा : ‘‘जो शख्स अल्लाह और उसके रसूल की इताअत और पैरवी करेगा तो ऐसे लोग भी जन्नत में उनके साथ होगें, जिन पर अल्लाह ने ईनाम फ़रमाया यानी अंबिया, सिद्दीकीन, शहीद और सालेहीन और यह बहुत अच्छे साथी हैं। (अल निसा – 69)

❖ हुज़ूर सल्ल० एक मर्तबा कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे रास्ते में एक गुम्बद बना हुजरा देखा जो ऊँचा बना हुआ था, आप सल्ल० ने साथियों से पूछा तो उन्होंने अर्ज़ किया कि यह फ़लां शख़्स ने ये गुम्बद बनवाया है। हुज़ूर सल्ल० यह सुन कर ख़ामोश हो गये दूसरे वक्त वह सहाबी रसूल सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुऐ और सलाम किया आपने तवज्जो नहीं दी। उन्होंने इस ख़्याल से कि शायद आप सल्ल० ने नहीं सुना दोबारा सलाम अर्ज़ किया

आप सल्ल० ने फिर नज़र अन्दाज़ किया और जवाब नहीं दिया। वह यह बात किस तरह बरदाश्त कर सकते थे, दूसरे सहाबा से दरयाफ़्त फ़रमाया कि इसकी क्या वजह है, उन्होंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल० बाहर तशरीफ़ ले गये थे, रास्ते में तुम्हारा हुजरा देखा था और यह दरयाफ़्त फ़रमाया था कि यह किसका है यह सुन कर वह सहाबी समझ गये, फ़ौरन घर वापस आकर उन्होंने उस गुम्बद को तोड़ कर इस तरह ज़मीन के बराबर कर दिया कि इसका नाम व निशान भी बाक़ी न रहा। सयोंगवश हुज़ूर का उसी जगह से दूसरी बार गुज़र हुआ तो देखा कि गुम्बद वहां नहीं है पूछने पर सहाबा ने उनसे हुई गुफ्तुगु दोहराई हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया कि हर तामीर (निमार्ण) आदमी पर वबाल है मगर वह तामीर जो ज़रूरत और मजबूरी की हो।

इताअते रसूल की यह कैफ़ियत इस दर्जे सहाबा में मौजूद थी कि बज़ाहिर निहायत मामूली और ग़ैर अहम मामलों में भी सहाबा फ़ौरन हुक्म की तामील करते थे।

❖ हज़रत अनस रज़ि० बयान करते हैं कि शराब को हराम करने वाली आयत नाज़िल होने से पहले मैं हज़रत अबू तल्हा रज़ि० घर लोगों को शराब पिला रहा था, इसी दौरान शराब के हराम होने की आयत नाज़िल हुयी। आप सल्ल० ने एलान करा दी कि अब शराब हराम हो गयी है। इसलिये कोई शख्स न तो शराब पिये न पिलाये न इसका कारोबार करे। आप सल्ल० का हुक्म सुनते ही हमने शराब के मटके तोड़ दिये और उसे मदीना की गलियों में बहा दिया। फिर लोगों ने कभी न तो शराब पी न ही उसे हाथ लगाया। (बुखारी)

❖ सहाबा–ए–कराम रसूलुल्लाह सल्ल० की इमामत में ज़ुहर की नमाज़ अदा करे रहे थे, आप सल्ल० ने नमाज़ ही की हालत में अपना रुख ख़ानाये काबा की तरफ़ फेर लिया, क्योंकि हालते नमाज़ में आप सल्ल० पर क़ुरआन मजीद की यह आयत नाज़िल हुयी कि अपने चेहरों को मस्जिदे हराम की तरफ़ फेर लो जब आप सल्ल० ने अपना रुख काबा की तरफ़ फेर लिया तो सहाबा रज़ि० ने आप की इताअत करते हुये फौरन अपना रुख काबे की तरफ़ फेर लिया। नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद आप सल्ल० ने सहाबा को किब्ला तबदील हो जाने की आयत सुनाई। इस वाकिये पर अल्लामा इब्ने क्य्यम रह० कहते हैं कि किब्ले की तबदीली की वाक़िया बड़ा ही अहम वाक़िया था और यह अहले ईमान की वफ़ादारी और इताअते रसूल सल्ल० की खुली हुयी आज़माइश थी।

❖ हज़रत कैस बिन साबित रज़ि० उँची आवाज़ में बोला करते थे जब कुरआन की सूरह हुजरात की यह आयत नाज़िल हुयी ‘‘ऐ ईमान वालों अपनी आवाज़ को नबी की आवाज़ से बलन्द न किया करो और उनसे इस तरह बेतकल्लुफ़ी से बात न करो जिस तरह आपस में एक दूसरे से करते रहते हो, ऐसा न हो तुम्हारे आमाल बर्बाद हो जायें और तुमको खबर भी न हो’’ तो उन्होंने मस्जिद में आना छोड़ दिया, जब आप सल्ल० ने मस्जिद न आने की वजह पूछी तो उन्होंने कहा मेरी आवाज़ ऊँची है, इस डर से हाज़िर नही होता था कि सावधानी के बावजूद कहीं मेरी आवाज़ बुलन्द न हो जाये और मेरे सारे आमाल बर्बाद हो जायें आप सल्ल० ने फ़रमाया ‘‘तुम उनमें से नहीं हो तुम तो जन्नती हो’’।

❖ एक बार एक यहूदी औरत ने ज़हर मिला गोश्त पका कर आप सल्ल० की दावत की ताकि आप सल्ल० ख़त्म हो जायें। आप सल्ल० ने दावत कुबूल कर ली और अपने सहाबी हज़रत बशीर रज़ि० को लेकर उसने घर तशरीफ़ ले गये। जब दोनों ने खाना शुरु किया तो सहाबी ने निवाला निगल लिया और आप सल्ल० ने उसे मुंह में डालते ही थूक दिया और फ़रमाया। मुझे ख़बर दी गयी है कि इस खाने में ज़हर मिला है। हज़रत बशीर रज़ि० ने कहा या रसूलुल्लाह! मुझे भी गोश्त बदमज़ा लग रहा था लेकिन मैंने इसलिये खा लिया कि चबाया हुया लुकमा आपके सामने थूक देना बड़ी बेअदबी थी, फिर सहाबी उसी ज़हर के असर से इन्तिक़ाल कर गये।

❖ बद्र की जंग में दो कम उम्र के लड़के मआज़ और मऊज़ रज़ि० शरीक हुये और इस इरादे से शरीक़ हुये कि उन्होंने सुना था कि अबू जहल रसूलुल्लाह सल्ल० को गालियां देता हैं चुनांचे मैदाने बद्र में पहुंचे मगर अबू जहल को पहचानते न थे। उन्होंने हज़रत अबदुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० से उसके बारे में पूछा! जब उन्होंने अबू जहल की निशानदेही की तो यह दोनों उसपर छपट पड़े और मऊज़ की तलवार की मार से अबू जहल ज़मीन पर तड़पने लगा।

❖ एक मर्तबा हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि० हज के लिये मस्जिद में आए तो उस वक़्त हुज़ूर सल्ल० ख़ुत्बा दे रहे थे कि यकायक उनके कान में हुज़ूर की आवाज़ आयी बैठ जाओ। हज़रत इब्न मसूद रज़ि० उस वक़्त मस्जिद के दरवाज़े पर थे आप सल्ल० की आवाज़ सुनते ही वहीं बैठ गये। नबी सल्ल० ने जब आपको मस्जिद के दरवाज़े पर बैठे देखा था तो फ़रमाया ऐ इब्न मसूद रज़ि० आगे जाओ, तब हज़रत इब्न मसूद रज़ि० मस्जिद के दरवाज़े से उठ कर अन्दर तशरीफ ले आऐ।

❖ उहद की जंग में दुश्मन की तादाद तीन हज़ार थी और मुसलमानों की तादाद सात सौ थी जंग में मुसलमानों की जीत हुयी लेकिन कुछ वजह से जीती हुयी जंग हार में बदल गयी उसमें सत्तर मुसलमान शहीद हुये। हार के बाद कुछ नौजवान मुसलमान अपनी जानें बचाकर अपने घरों को लौट आये। जब वह घर पहुंचे तो उनकी माओं, बहनों और बीवियों ने उनका स्वागत नहीं किया बल्कि अपना रुख फेर लिया। यानी मां को अपने बेटे से, बहन को अपने भाई से और बीवी को अपने शौहर की जान से ज़्यादा रसूलुल्लाह सल्ल० से मुहब्बत थी।

❖ एक सहाबी आप सल्ल० की ख़िदमत में बैअत के लिये हाज़िर हुए उन्होंने देखा कि आप सल्ल० के कुर्ते के गले का बटन खुला हुआ है। आप सल्ल० की पैरवी में उन्होंने भी पूरी ज़िन्दगी अपने कुर्ते के गले का बटन खुला रखा और जज़्बाये सुन्नत में सर्दी–गर्मी वगैरा किसी की कुछ परवाह न की। (अबू दाउद)

❖ जब आप सल्ल० की शहादत की ख़बर मशहूर हो गयी तो एक सहाबिया रज़ि० मैदाने जंग की तरफ़ आयीं और हर मिलने वाले से आप सल्ल० की खैरियत मालूम करती थी। लोगों ने उन्हें बताया कि तेरे भाई इस जंग में शहीद हो गये मगर उन्होंने आप सल्ल० की ही खैरियत मालूम की। उन्हें बताया गया कि तेरे शौहर भी इस जंग में काम आ गये मगर उन्होंने रसूलुल्लाह सल्ल० की खैरियत मालूम की, फिर उनके बेटों की शहादत की ख़बर दी गयी तब भी वह उस वक्त के लिये बेचैन रही कि बताओ रसूलुल्लाह का क्या हाल है। जब लोगों ने उन्हें बताया कि रसूलुल्लाह सल्ल० ज़िन्दा हैं तो यह खुशखबरी सुन कर वह मुत्मइन हो गयीं, उन्होंने कहा, ज़रा

मुझे भी दिखला दो, लोगों ने इशारे से बतलाया, जब उनकी नज़र आप सल्ल० पर पड़ी तो सहसा पुकार उठीं, आपके बाद हर मुसीबत हेच है। (सीरते इब्ने हश्शाम)

सहाबा कराम के सामने जब भी रसूल सल्ल० का कोई हुक्म और आदेश आता, उनको उससे बेपरवाई बरतने की हिम्मत न होती। इसी तरह अगर कोई सहाबा सीधे तौर पर सल्ल० के हुक्म को न सुनता, लेकिन उनके सामने हुक्म बयान किया जाता तो भी उसके मुताबिक़ फ़ौरन अमल पैरा हो जाते थे। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० ने एक मर्तबा हज़रत उमर रज़ि० के सामने यह हदीस रखी कि जहाँ ताऊन (plague) की बीमारी फैली हुई हो वहाँ न जाओ लेकिन अगर वहाँ पहले से ही मौजूद हो तो वहाँ से मत भागो। हज़रत उमर रज़ि० उसी जगह जाने वाले थे जहाँ ताऊन की बीमारी फैली हुई थी यह सुन कर आपने जाने का इरादा तर्क कर दिया।

❖ आप सल्ल० की वफ़ात के बाद हज़रत बिलाल रज़ि० को इस कद्र तकलीफ़ पहुंची कि उनसे बर्दाश्त न हो सका। अज़ान के बाद सल्ल० का नाम आता और कब्र शरीफ़ को देखते तो आप सल्ल० की याद ताज़ा हो जाती। इसलिये मदीना से चले गये। कुछ महीनों बाद वापस आये तो लोगों ने उनसे बार-बार अज़ान देने के लिये कहा। जब वह खड़े हुये और अशहदुअन्ना मुहम्मदर्रसूलुल्लाह पर पहुंचे तो आप सल्ल० की मुहब्बत में रोते-रोते बेहोश हो कर गिर पड़े और तमाम लोग रोने लगे।

❖ अगर कोई शख्स हज़रत अनस रज़ि० को कोई खुश्बू पेश करता तो उसे क़ूबूल करने से इन्कार नहीं करते थे और कहते थे कि रसूल सल्ल० ने कभी इससे इन्कार नहीं किया। (बुख़ारी) अनस रज़ि० का यह वाकिया देखने में मामूली है लेकिन दर हक़ीक़त यहाँ भी वही जज़्बये इत्तबाये रसूल कारफ़रमा है।

❖ ग़ज़वे उहद में रसूलुल्लाह सल्ल० के चेहरये मुबारक पर कन्कर धंस गये थे, हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि० ने खुद एक कड़ी को अपने दातों से पकड़ कर निकालना चाहा तो उसके साथ उनका एक दांत भी गिर पड़ा, दूसरी कड़ी निकाली तो दूसरा दांत भी उसके साथ आ गया। (बुख़ारी)

❖ हज़रत अबू दुजाना रज़ि० ढाल बन कर आपके साथ खड़े हो गये, तीर उन पर गिरते रहे लेकिन वह इस तरह आप पर झुके रहे यहाँ तक कि उनकी पीठ तीरों से छलनी हो गयी। साद बिन अबी वक़ास रज़ि० उसी जगह खड़े होकर हुज़ूर सल्ल० की हिदायत में दुशमन पर तीर चलाते रहे आप एक एक तीर उनको अपने दस्ते मुबारक से इनायत फ़रमाते और इरशाद होता तुम पर मेरे माँ बाप क़ुरबान इसी तरह तीर चलाते रहो। (बुखारी)

❖ मुश्रिकीन आपकी तलाश में थे लेकिन तक़दीरे इलाही का फ़ैसला कुछ और ही था जब उन्होंने आप सल्ल० पर वार किया तो लगभग दस आदमी आपके सामने आ गये और सभी एक-एक करके आप सल्ल० पर क़ुरबान हो गये, फ़िर हज़रत तलहा अब्दुल्लाह रज़ि० अपना हाथ सामने कर दिया और तीरों को रोकना शुरू कर दिया यहाँ तक कि उनकी सब उंगिलयां ज़ख़्मों से लाल हो गयीं और हाथ बेकार हो गया। (ज़ादुल मआद)

❖ हज़रत अनस बिन नसर रज़ि० महाजिर व अन्सार के कुछ लोगों के पास से गुज़रे और देखा कि वह हाथ पर हाथ रखे बैठे हैं, उन्होंने कहा कि तुम लोग यहाँ पर बैठे क्या कर रहे हो। उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्ल० शहीद हो गये, हज़रत अनस बिन नसर रज़ि० ने कहा कि फिर आप सल्ल० के बाद ज़िन्दा रहने से क्या फ़ायदा, उठो और जिस पर रसूल सल्ल० ने जान दी है उसी पर तुम भी जान दे दो। यह कह कर आगे बढ़े दुशमन से लड़े और जान दे दी। उनके भतीजे अनस बिन मालिक रज़ि० कहते हैं कि उस दिन हमने उनके जिस्म पर सत्तर ज़ख़्म गिने थे। ज़ख़्मों की ज़्यादती से उनको पहचानना नामुम्किन हो रहा था। उनकी बहन ने उनकी उंगली के पोरों से उनको पहचाना जिस पर बचपन की निशानी थी। (सीरत इब्ने हश्शाम)

❖ ज़ैद बिन साबित रज़ि० बयान करते हैं कि ग़ज़वये उहद के मौक़े पर रसूलुल्लाह सल्ल० ने मुझे साद बिन रबीअ की तलाश में भेजा और फ़रमाया कि अगर वह नज़र आ जाऐं तो मेरा सलाम कहना और कहना कि रसूल सल्ल० ने दरयाफ्त किया है कि इस वक़्त तुम्हें कैसा महसूस हो रहा है, कहते हैं कि लाशों के दरम्यान में उनको तलाश करता फिर रहा था कि एक जगह वह मुझे नज़र आऐ, फिर मैं क़रीब गया देखा कि आख़री वक़्त था उनके जिस्म पर भाला और तलवार के सत्तर ज़ख़्म थे। मैंने कहा रसूलुल्लाह सल्ल० ने तुमको सलाम कहा है और फ़रमाया है कि मुझे बताओ इस वक़्त तुम्हारी क्या कैफ़ियत है उन्होंने जवाब दिया कि रसूलुल्लाह सल्ल० से सलाम अर्ज़ करना और कहना कि इस वक़्त मुझे जन्नत की ख़ुशबू महसूस हो रही है, और मेरी क़ौम अन्सार से यह कहना कि अगर दुशमन रसूल सल्ल० तक पहुँच

गये और तुम्हारी दम में दम रहा तो अल्लाह तआला के लिये तुम्हारे लिये कोई बहाना न होगा यह कहते हुऐ उनकी रूह परवाज़ कर गयी। (ज़ादुलमआद)

❖ जब हज़रत अय्यूब रज़ि० को रसूल सल्ल० की मेहमान नवाज़ी का मौका हाथ आ गया हज़रत अय्यूब रज़ि० का मकान दो मन्ज़िला था उन्होंने उपरी मन्ज़िल को अपने घर वालों के साज़ व सामान से ख़ाली कर दिया ताकि रसूल सल्ल० उस पर क़ियाम फ़रमायें, लेकिन रसूल सल्ल० ने निचली मन्ज़िल को उपरी मन्ज़िल पर प्राथमिकता दी और उसे अपने क़ियाम के लिये पसन्द फ़रमाया। हज़रत अबू अय्यूब रज़ि० ने आप की मर्ज़ी के आगे सर तसलीम ख़म कर दिया। जब रात हुई और रसूल सल्ल० आराम करने के लिये अपनी ख़्वाब गाह में तशरीफ़ ले जा चुके तो हज़रत अबू अय्यूब रज़ि० और उनकी बीवी दोनों ऊपरी मन्ज़िल में चले गये। हज़रत अबू अय्यूब रज़ि० ने अपनी बीवी से कहा तुम्हारा भला हो यह हमने किया क्या यह बात मुनासिब है कि रसूल सल्ल० नीचे रहें और हम ऊपर रहें। क्या यह बात हम को ज़ेब देती है कि हम रसूल सल्ल० के ऊपर चलें-फिरें क्या रसूल सल्ल० और वहीये इलाही के दरम्यान हायल होना हमारे लिये मुनासिब है। आह! इस तरह में तो हम तबाह व बर्बाद हो जायेंगे। उस वक़्त दोनो मियां बीवी सख्त हैरानी व परेशानी से दो चार थे और उनकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि क्या करें। आख़िरकार उनको उस वक़्त थोडा सा सुकून नसीब हुआ जब वह उपरी मन्ज़िल के उस हिस्से में सिमट गये जो रसूल सल्ल० के ठीक ऊपर नहीं था, अगर चलते तो बीच में चलने की बजाए किनारे चलते थे। सुबह को रसूलुल्लाह सल्ल० से फिर ऊपरी मन्ज़िल में तशरीफ़ ले जाने की दरख्वास्त की। रसूल सल्ल० ने

उनको तसल्ली देते हुए फ़रमाया चूँकि बहुत से लोग मेरे पास मिलने के लिये आते रहते हैं, इसलिये नीचे ही रहना मेरे लिये ज़्यादा मुनासिब और आरामदेह है। उस पर हज़रत अबु अय्यूब रज़ि० ने फिर आपकी बात मान ली, और ऊपरी मन्ज़िल में चले गये। एक सर्द रात को उनका पानी का घड़ा टूट गया और उसका पानी ऊपरी मन्ज़िल के छत पर फैल गया दोनो मियां बीवी उस फैले हुए पानी को सुखाने के लिये मुतवज्जा हुऐ। उस वक़्त उनके पास सिर्फ़ एक कम्बल था जिस को वह लिहाफ़ के तौर पर इस्तेमाल किया करते थे। इस ख़ौफ़ से कि कहीं यह पानी नीचे टपक कर रसूल सल्ल० के लिये परेशानी का सबब न बन जाए तो उन्होंने उस कम्बल से पानी सुखा दिया फिर सुबह के वक्त बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया कि मेरे माँ बाप आप सल्ल० पर क़ुरबान हों मुझे अच्छा नहीं लगता कि आप सल्ल० मुझसे नीचे हों और मैं ऊपर और फिर रात को पेश आने वाले घड़े के वाक़िये को बताया तो रसूल सल्ल० ऊपरी मन्ज़िल में जाने के लिये राज़ी हो गये और हज़रत अबू अय्यूब रज़ि० अपनी बीवी के साथ नीचे आ गये। (ज़िन्दिगयां सहाबा-ए-कराम की-राफ्त पाशा)

❖ फ़तेह मक्का के ज़माने में आप सल्ल० हज़रत उम्मे हानी के मकान पर तशरीफ़ ले गये और वहाँ शरबत पिया उसके बाद आप सल्ल० ने उनको दे दिया। वह नफ़्ली रोज़े से थीं लेकिन शरबत पी लिया आप सल्ल० को मालूम हुआ तो रोज़ा तोड़ने का सबब पूछा उन्होंने कहा मैं आप सल्ल० का झूठा वापिस नहीं कर सकती थी। (अहमद)

तारीख़ इन जैसे वाक़ियात से भरी हुई है कि सहाबाए कराम के दिलों में आप के हुक्म की बे चूँ चराँ तामील आपकी खुशी और इताअत का जज़्बा अपनी जान व माल और औलाद व माँ-बाप से भी ज़्यादा था। सहाबाए कराम यह जानते थे कि मुहब्बत सिर्फ ज़बानी दावे से साबित नहीं हो सकती। इसलिये अल्लाह तआला ने उन लोगों को जो अल्लाह से मुहब्बत का दावा करते हैं अपनी किताब में इरशाद फ़रमाता है कि अगर तुम को खुदा से मुहब्बत है तो रसूल की पैरवी करो, इसीलिये सहाबाए कराम ने रसूल सल्ल० की पैरवी में वह काम अन्जाम दिये जो रहती दुनिया तक इस्लाम की सच्चाई और आप सल्ल० के साथियों के ख़ुलूस व मुहब्बत का मफ़हूम ज़ाहिर करते रहेंगे। कभी भी किसी सहाबी रज़ि० ने हुज़ूर के सामने अपनी आवाज़ को बुलन्द नहीं किया कि कहीं हुज़ूर की आवाज़ नीची न हो जाऐ, जैसा कि इस अदब व एहतराम की तालीम परवरदिगार ने खुद इस तरह दी है। ''ऐ लोगों अपनी आवाज़ को नबी की आवाज़ से बुलन्द न करो और न ही उनके साथ ऊँची आवाज़ में बात करो जिस तरह तुम आपस में एक दूसरे से करते हो कहीं ऐसा न हो जाए कि तुम्हारा किया कराया सब बर्बाद हो जाए और तुम्हें खबर भी न हो (सुरह हुजरात)

ऊपर की आयात के ताल्लुक़ से क़ुरआन के टीकाकार लिखते हैं कि एक मर्तबा क़बीला बनू तमीम के लोग आप सल्ल० की खिदमत में हाज़िर हुए। यह बात ज़ेरे ग़ौर थी कि इस क़बीले पर हाकिम किसको बनाया जाए। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने क़ैनक़ाअ इब्ने माबद के लिये राय दी और हज़रत उमर रज़ि०

ने इक़रा इब्ने हाबिस के ताल्लुक़ से राय दी, इस मामले में हज़रत अबू बक्र रज़ि० व उमर रज़ि० के बीच आप की मजलिस में गुफ़्तुगु हो गयी, और गुफ़्तूगु में दोनों की आवाज़ें बुलन्द हो गयीं इस पर यह आयत नाज़िल हुईं। (बुख़ारी)

रसूलुल्लाह सल्ल० के सामने आप की आवाज़ से अपनी आवाज़ बुलन्द करना और इस तरह गुफ्तूगु करना जैसे आपस में एक दूसरे से बेझिझक किया करते हैं एक क़िस्म की बेअदबी और गुस्ताखी है। चुनांचे इस आयात के नुज़ूल के बाद सहाबाए कराम का यह हाल हो गया कि हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह क़सम है कि अब मैं मरते दम तक आपसे इस तरह बोलूंगा जैसे कोई किसी से धीमी आवाज़ से बोलता हो और हज़रत उमर रज़ि० इस क़दर धीमे बोलने लगे कि कभी-कभी दोबारा पूछना पडता था और हज़रत साबित बिन क़ैस फ़ितरी तौर पर बहुत बुलन्द आवाज़ थे, यह आयत सुनकर बहुत डरे और रोऐ यहां तक कि मस्जिदे नबवी में आना छोड़ दिया था। (बुखारी)

इन वाक़ियात से साफ़ तौर पर मालूम होता है कि सहाबाए कराम नबी सल्ल० के अदब व एहतराम और इताअत पैरवी में किस दर्जे सक्रिय और सावधान थे कि इस आयत के नुज़ूल के बाद हज़रत उमर रज़ि० की आवाज़ इस क़द्र धीमी हो गयी थी कि नबी सल्ल० उनसे फ़रमाते, दोबारा कहो मैं आपकी बात पूरी तरह नहीं समझ सका हूँ।

हज़रात! हदीसे रसूल सल्ल० भी आप सल्ल० की आवाज़ ही है। हदीस रसूल के होते हुए अपना तर्क पेश करना अपनी राय व समझ को हदीसे रसूल पर ऊपर रखना भी नबी सल्ल० की आवाज़ पर अपनी आवाज़ को बुलन्द करना है।

आप के उस्वये हसना यानी नमूनये ज़िन्दगी पर अमल पैरा होना ही मुहब्बते रसूल की दलील है जैसा कि क़ुरआन का इरशाद है "तुम्हारे लिये अल्लाह के रसूल एक बेहतरीन नमूना हैं"। (अहज़ाब–21)

यानी आप सल्ल० के तमाम अक़्वाल व अफ़आल (कथनों और कर्मों) और हालात में मुसलमानों के लिये आप सल्ल० की पैरवी ज़रूरी है चाहे उनका ताल्लुक़ इबादात से हो या समाजी ज़िन्दगी से मआशी ज़िन्दगी (आर्थिक जीवन) हो या सियासत से, ज़िन्दगी के हर हिस्से में आप सल्ल० की हिदायतों की पैरवी लाज़िम है। उक्त आयत की व्याख्या में क़ुरआन के विख्यात टीकाकार अल्लामा पीर मुहम्मद करम शाह अज़हरी बरेलवी रह० लिखते हैं।

नज़रियात (विचार धारायें) जब तक सिर्फ नज़रियात हों तो न उसकी अच्छाई और बुराई का सही अन्दाज़ा लगाया जा सकता है, न उनमें कश्मकश और जाज़्बियत पायी जा सकती है कि वह किसी को अमल पर उभार सकें। दलीलों के अम्बार लगा दीजिये ख़ूबसूरत अल्फ़ाज़ के दरिया बहा दीजिये। लोग प्रशंसा और तारीफ़ तो ज़रूर करेंगे लेकिन उन नज़रियात और विचार धाराओं को अपनाने और उसके अपनाने की जो ज़िम्मेदारियां हैं और उन ज़िम्मेदारियों को निभाने की राह में जो ख़तरात हैं उनको वह उठाने के लिये तैयार नहीं होंगे। इस्लाम दार्शनिक विचारधाराओं का नहीं है कि आप अपने ड्राइंग रूम में आरामदेह सोफ़ों पर बैठ कर उन्हें बहस का विषय बनाऐं। अपने ज़ेहन और विवेक से तरह-तरह के बदलाव करें। मजलिसें और महफ़िले सजा कर तक़रीरें करें और फिर यह समझ लें कि हमने अपना फ़र्ज़ अदा

कर दिया। बल्कि यह तो एक निज़ामे ज़िन्दगी (जीवन व्यवस्था) है जो ज़िन्दगी के हर मोड़ पर रहनुमाई करता है और हर मर्हला पर सन्देश देता है। उस पर अमल करना और उसकी शिक्षाओं पर चलना उस वक़्त तक नहीं जब आसान नहीं जब तक कि एक व्यवहारिक और अमली नमूना हमारे पास न हो, इसलिये अल्लाह तआला ने अपनी मख़लूक़ के लिये सिर्फ़ क़ुरआन नाज़िल करने पर बस नहीं किया बल्कि उसकी दावत व तबलीग़ के लिये अपने महबूब को भेजा कि वह एहकामे ख़ुदा वन्दी पर अमल करके दिखाऐ और उन पर अमल करने से ज़िन्दगी में जो ख़ूबसूरती और निखार पैदा होता है उसका अमली नमूना पेश करे ताकि जो हक़ की खोज में लगे हैं वह क़ुरआनी शिक्षाओं की अमली तसवीर देख कर उसको अपने सीने से लगा लें।

यह आयत अपने शब्दों के एतेबार से आम है, उसे ज़िन्दगी के किसी एक विभाग के साथ वाबस्ता (संलग्न) नहीं किया जा सकता। लेकिन जिस मौक़े पर उसका नुज़ूल हुआ, उसने उसकी अहमियत को और अधिक बढ़ा दिया है। यह आयत ख़न्दक़ की जंग के मौके पर नाज़िल हुई जबकि दावते हक़ पेश करने वालों के रास्तों में पेश आने वाली सारी मुश्किलें और मुसीबतें पूरी शिद्दत से ज़ाहिर हो गये। दुशमन सारे अरब को साथ लेकर आ धमका है यह जुमला इतना अचानक है कि उसको पस्पा करने के लिये जिस तैयारी की ज़रूरत है उसके लिये वक्त नहीं, तादाद कम है। खाने पीने के सामान की इतनी कमी है कि कई वक़्त भूखा रहना पड़ता है। मदीने के यहूदियों ने ऐन वक़्त पर दोस्ती का मुआहेदा (सन्धि) तोड़ दिया। उनकी ग़द्दारी के सबब

हालात और जटिल हो गये हैं। दुशमन सैलाब की तरह बढा चला आ रहा है उसके पहुँचने से पहले मदीना तय्यबा की पश्चिमी दिशा को ख़न्दक खोद कर सुरक्षित बना दिया और ज़रुरी है, इन हालात हुजूर सरवरे आलम सल्ल० अपने सहाबा के साथ-साथ मौजूद हैं ख़न्दक़ खोदने का मौक़ा आता है तो एक सिपाही की तरह ख़न्दक़ खोदने लगते हैं। मिटटी उठा उठा कर बाहर फेंक रहे हैं, दूसरे मुजाहिदीन की तरह भूखा रहकर तकलीफ़ भी बरदाश्त फ़रमाते हैं। अगर सहाबा ने पेट पर एक पत्थर बांध रखा है तो आपके पेट पर दो पत्थर बंधे दिखाई देते हैं, महीना भर सख्त सर्दी में मैदान जंग में सहाबा के साथ दिन-रात ठहरे हुये हैं, दुशमन के भारी लश्कर को देख कर भी परेशान नहीं होते, बनू क़ुरैज़ा की वादा ख़िलाफ़ी का इल्म होता है तब भी माथे पर बल नहीं पड़ते, मुनाफिक़ (कपटा चारी) तरह तरह की बहाना बाज़ियां करने मैदान जंग से फ़रार होने लगते हैं तब भी परेशानी नहीं हुई। इन तमाम नाज़ुक और सख़्त हालात में हौसला व हिम्मत का पहाड बने खड़े हैं। क़दम-क़दम पर सहाबा को तसल्ली देते हैं। मुनाफिक़ों को नज़र अन्दाज़ करते हैं, दुशमन पर रोब डालने के लिये कोई कमी नहीं छोड़तें।

फिर जंगी और सियासी रेखाओं पर ऐसी तदबीरें की जाती हैं कि दुशमन आपस में टकरा जाता है, और हमलावर ख़ुद नाकाबन्दी छोड़ कर एक दूसरे पर गालियों की बौछार करते हुए, एक दूसरे पर ग़द्दारी और वादा ख़िलाफ़ी के इल्ज़ामात लगाते हुऐ भाग जाता है, गर्ज़ कि एक माह का वक़्त ऐसा है कि महबूबे ख़ुदा मुहम्मद सल्ल० की पाकीज़ा ज़िन्दगी के सारे पहलू अपनी पूरी

ख़ूबसूरती के साथ उजागर हो जाते हैं। उस वक्त यह आयत नाज़िल फ़रमाई गयी कि इन भयानक ख़तरात में तुमने प्यारे रसूल का तरीक़येकार देख लिया। यह कितना सच्चा और इख़लास व तक़वा के रंग में रंगा हुआ है। यही तुम्हारी ज़िन्दगी के हर मोड़ पर तुम्हारे लिये एक खूबसूरत नमूना है। आप सल्ल० के नक़्शे क़दम को ख़िज़रे राह बनालो उसके दामने में शफ़क़त को मज़बूती से थाम लो, यक़ीनन मन्ज़िल तक पहुँच जाओगे।

(तफ़सीर ज़ियाउल क़ुरआन)

एक हदीस के अल्फ़ाज़ हैं ''सबसे बेहतरीन कलाम अल्लाह की किताब है और सबसे बेहतर तरीक़ये ज़िन्दगी रसूलुल्लाह सल्ल० का तरीक़ा है। (मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि रसूल सल्ल० ने फ़रमाया ''मेरी पूरी उम्मत जन्नत में दाखिल होगी सिवाए उसके जिसने मेरा इन्कार किया। आप सल्ल० से पूछा गया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० कौन हैं आप का इन्कार करने वाले आप सल्ल० फ़रमाया जो मेरी इताअत करेगा जन्नत में दाखिल होगा और जिसने मेरी इताअत न की उसने मेरा इन्कार किया। (बुखारी)

हदीसे रसूल से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि अल्लाह की किताब के साथ जो अमली नमूना हमारी रहनुमाई (मार्गदर्शन) के लिये बख्शा गया है वह रसूल सल्ल० की ज़िन्दगी का नमूना है और जो कोई इस नमूने से और इस तरीक़े से दूरी बनाता है और रसूल सल्ल० की पैरवी नहीं करता वह अपने दावाये मुहब्बत में झूठा है। क़ुरआन ने अकसर मुक़ामात पर रसूल सल्ल० की इताअत को इताअते खुदावन्दी और मुहब्बते इलाही की बुनियाद

क़रार दिया है और इसी तरह रसूल सल्ल० की इताअत से मुंह मोड़ने पर दर्दनाक अज़ाब की धमकी दी है और उसे कुफ़्र कहा है।

सूरह नूर में इर्शाद होता है।

''नमाज़ कायम करो और ज़कात दो और रसूल सल्ल० के हुक्म पर चलो ताकि तुम पर रहम किया जाये''

सूरह आले इमरान में यह चेतावनी दी गयी।

''उनसे कहो कि अल्लाह और रसूल सल्ल० की इताअत कुबूल कर लें फिर अगर वह इताअत से मुंह मोड़े तो अल्लाह ऐसे काफिरों से मुहब्बत नहीं करता''

सूरह हश्र में हुक्म किया गया।

''और जो रसूल तुम्हें दें उसे ले लो और जिससे रोकें उससे रुक जाओ और अल्लाह से डरो क्योंकि उसकी मार बहुत सख़्त है''

सूरह अहज़ाब में हुक्म आता है।

''किसी मुसलमान मर्द और किसी मुसलमान औरत के लिये यह दुरुस्त नहीं कि जब अल्लाह और उसका रसूल उसके बारे में कोई फैसला कर दें तो इस बात में उसका इख्तियार बाकी रहे तो जिसने अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० की नाफरमानी की, वह खुली गुमराही में पड़ गया''।

सूरह फुरकान में है।

''उस दिन नाफरमान बन्दा अपने हाथों को काटेगा और कहेगा ऐ काश मैं रसूल के रास्ते पर लग जाता''

इन्हीं शिक्षाओं का नतीजा था कि सहाबा-ए-कराम छोटे-बड़े हर मसले के फ़ैसले के लिये रसूल सल्ल० की तरफ़ पलटते थे। आपके हुक्म और मनाही की पाबन्दी करते और इबादात व मामलात मे आप सल्ल० की पैरवी करते थे। वह जानते थे कि इताअत और पैरवी ही इज़हारे मुहब्बत की अलामत है।

रसूल सल्ल० की इताअत हर वक्त और हर तरह के हालात के लिये होती है, शरीअते मुहम्मदी सल्ल० का तक़ाज़ा है कि इन्सान अपने ज़ाती फ़ायदों और मक़ासिद से ऊपर उठ कर रसूल सल्ल० की इताअत क़ुबूल करे और रसूल सलल० को अपनी अक़ीदत व आस्था की बुनियाद तसव्वुर करने के साथ-साथ उसको इताअत का मर्कज़ भी तसलीम करे। यही रसूल सल्ल० की मुहब्बत की दलील है।

मोहम्मद सल्ल० से मुहब्बत का मतलब यह हरगिज़ नहीं है कि केवल ज़बान से आप सल्ल० की मुहब्बत का दावा किया जाए लेकिन पैरवी किसी और की इख़्तियार की जाए, आप सल्ल० के फ़रमान को छोड कर दूसरों के आदेशों का पालन किया जाए। आप सल्ल० की सुन्नत की पैरवी करने के बजाए ज़माने की रस्म व रिवाज की पाबन्दी की जाए, बल्कि मुहब्बते रसूल सल्ल० का मतलब यह है कि आप सल्ल० का दामन मज़बूती के साथ पकड़ लिया जाए। हमारी ज़िन्दगी की कामयाबी उस पाक दामन से चिमट जाने में है, दामने रसूल सल्ल० थामने का मतलब यह है कि हमारा रहन-सहन, उठना बैठना, खाना पीना, सोना जागना, अख़लाक़ व मामलात ग़र्ज़ यह कि ज़िन्दगी के सारे काम रसूल

सल्ल० की सुन्नत के मुताबिक़ हों, आप सल्ल० की इताअत और पैरवी के बग़ैर एक मुखलिस और सच्चे मुसलमान की ज़िन्दगी की कल्पना भी नहीं की जा सकती। आप सल्ल० से मुहब्बत का तक़ाज़ा यह है कि ज़िन्दगी के हर मामले में आप सल्ल० की इताअत की जाए आप सल्ल० की सुन्नते मुबारका को हिर्ज़े जान बनाया जाए, सच तो यह है कि उम्मते मुस्लिमा की ज़िन्दगी आप सल्ल० का दामन थामने और उसकी मौत आप सल्ल० का दामन छोड़ देने में है। बकौल अल्लामा इक़बाल ने सच ही कहा है।

दामन्श अज़ दस्त दादन मर्दन अस्त
चूँ गुल अज़बाद ख़िजाँ अफ़रर्दन अस्त

(आप सल्ल० का दामन छोड़ कर जीना मर जाने के बराबर है जिस तरह फूल पतझड़ के तूफ़ानी हवा से मुरझा कर सूख जाते हैं)

अगर इस वक़्त हम अपनी समीक्षा और जायज़ा लें तो हर शख़्स पैग़म्बरे इस्लाम की मुहब्बत का दावेदार है। हम बज़ाहिर मुहब्बते रसूल में डूबकर ही आप के ज़िक्रे पाक की महफ़िलें सजाते हैं और सीरत रसूल सल्ल० के नाम से जलसे करते हैं और पूरी रात जाग कर उस जलसे में आप सल्ल० की पाकीज़ा ज़िन्दगी के वाकियात सुनते हैं और सुबह होते ही वही काम शुरु कर देते हैं जो सीरते रसूल के विपरीत है, उन सारी बुराइयों को इख़्तियार कर लेते हैं जिन से रसूल सल्ल० ने दूर रहने की सख़्त ताकीद की है। क्या मुहब्बत का यही मतलब है कि ज़बान से यूँ तारीफ़ और बड़ाई बयान की जाए और अमली ज़िन्दगी (व्यवहारिक जीवन) में इन तरीक़ों की मुख़ालफत हो रही हो।

दोस्तों! मुहब्बत रसूल का दावा सिर्फ़ शब्दों का खेल नहीं है बल्कि मुहब्बते रसूल अपने अन्दर गहरी हक़ीक़त और ना गुज़ीर तक़ाज़े रखता है जब एक व्यक्ति यह दावा करता है कि उसकी ज़िन्दगी की असल पूंजी मुहब्बते रसूल सल्ल० है तो इस मुहब्बत का तक़ाज़ा यह है कि वह ग़ैरुल्लाह से अपना ताल्लुक़ तोड़ ले और अपने रब से ताल्लुक़ मज़बूत करले और उससे बन्दगी और गुलामी का रिश्ता मज़बूत करे और दूसरे रहनुमाओं (मार्ग दर्शनों) को छोड़ कर रसूले रहमत के दामन से चिमट जाये और ज़िन्दगी के हर विभाग में रसूले रहमत की रहनुमाई क़ुबूल करे।

मगर अफ़सोस का मुक़ाम है कि रसूले अकरम की मुहब्बत का दम भरने के बावजूद आप सल्ल० की पाकीज़ा अमानत (धरोहर) जो आप सल्ल० ने अपनी शिक्षाओं की शक्ल में हमारे हवाले किया था हमने उसे बिल्कुल ही भुला दिया। हम ज़बाने क़ाल से यानी ज़बानी तौर पर तो रसूल सल्ल० की मुहब्बत के दावेदार हैं मगर ज़बाने हाल यानी अपनी अमली ज़िन्दगी से किसी और की मुहब्बत में गिरफ्तार हैं। हम रसूल सल्ल० से रहनुमाई हासिल करने के बजाए रहज़नों के परचम के नीचे नज़रआते हैं। हमारा मिशन इस्लाम का प्रचार व प्रसार था मगर हम ग़ैर इस्लामी विचारधाराओं को फैलाने में व्यस्त हैं। बुराइयों को उखाड़ फेंकने के बजाए बुराइयों को फैलाने में लगे हुये हैं। बुराइयों को मिटाने के बजाय अच्छाइयों की जड़ काट रहे हैं। आज मुहब्बते रसूल सल्ल० का दावा करने वालों के दिल बातिल फ़िक्र व नज़रियात का मर्क़ज़ बना हुआ है।

मुसलमान की ज़रूरतों में सबसे अहम और लाज़िमी ज़रुरत यही है कि रसूल सल्ल० की पाकीज़ा ज़िन्दगी से बखूबी वाक़िफ़ हों, ताकि उस नमूने पर अपनी ज़िन्दगी को ढाल सकें और आप सल्ल० के नक़्शे क़दम पर चल कर दुनिया और आख़िरत की कामयाबी हासिल हो सके।

वह लोग जो रसूल सल्ल० की पैरवी नहीं करते फिर आप सल्ल० के पदचिन्हों को रहनुमा नहीं बनाते। आप सल्ल० के आदेशों के सामने सुना और इताअत किया कहते हुऐ सरे तसलीम ख़म नहीं करते वह अपने दावे मुहब्बत में झूठे हैं। महबूबियत हक़ीक़त में खुदा और रसूल सल्ल० की इताअत व फरमां बरदारी में पुख्तुगी और ठहराव का नतीजा है।

दोस्तों! अल्लाह के रसूल से सच्चा इश्क वह है कि ज़िन्दगी के हर मामले में यह जानने की कोशिश की जाए कि आप सल्ल० ने इस बारे में क्या हिदायतें दी हैं? फिर इस पर मुहब्बत व इताअत में जज़्बे के साथ अमल करने की कोशिश की जाये। जिन कामों को आपने हुक्म किया है इस पर अमल किया जाये और जिन कामों से रोका है उनसे रुक जाया जाये और जो दीन आप सल्ल० लेकर आये हैं उसे दूसरे इन्सानों तक पहुँचाने की कोशिश की जाये।

की मोहम्मद से वफ़ा तूने तो हम तेरे हैं
यह जहाँ चीज़ है क्या लोहे व क़लम तेरे हैं।

आप सल्ल0 की पाकीज़ा तालीमात

आप सल्ल0 ने फरमाया –

1. सारे इंसान आदम की औलाद हैं और आदम मिट्टी से पैदा किये गये थे। (तिरमिज़ी)

2. पानी का इस्तेमाल ज़्यादा न करो चाहे तुम बहते हुये दरिया के किनारे बैठे हो (इब्ने माजा)

3. जिस शख्स के दिल में ज़र्रा बराबर भी घमन्ड होगा वह जन्नत में नहीं जा सकेगा। (मुस्लिम)

4. सिलह रहमी करने वाला वह नहीं है जो बदले में ऐसा करे बल्कि वह है कि रिश्तेदार उसमे हुकूक (अधिकार) अदा न करें तब भी वह उनके साथ अच्छा सुलूक व बर्ताव करे (बुखारी)

5. पड़ोसियों के साथ अच्छा बर्ताव करो (तिर्मिज़ी)

6. वह मुसलमान नहीं है जिसका पड़ोसी उसकी शरारतों से सुरक्षित न हो। (मुस्लिम)

7. जिस शख्स में नर्मी न हो वह खैर व भलाई से वंचित है। (मुस्लिम)

8. जिसने किसी को धोखा दिया वह हम में से नहीं (मुस्लिम)

9. तकलीफदे चीज़ को रास्ते से हटा दो (अहमद)

10. हर जानदार के साथ अच्छा सुलूक करने पर अज्र (इनाम) है। (बुखारी)

11. जो शख्स अमानत का ख्याल न करे उसमे कुछ ईमान नही और जो शख्स अहद (प्रतिज्ञा) की पाबन्दी न करे उसमें कुछ दीन बाकी नहीं। (अहमद)

१२. हम में सबसे ज़्यादा मुकम्मल ईमान उस शख्स का है जिसमें अखलाक़ सबसे अच्छे हों। (बुखारी)

१३. मोमिन कभी ताने देने वाला, लानत करने वाला, बुरी बात करने वाला और ज़बान दराज़ नहीं होता। (तिर्मिज़ी)

१४. मोमिन झूठा और खियानत करने वाला नहीं हो सकता। (अहमद)

१५. जो शख्स खुद पेट भर खाये और उसका पड़ोसी भूखा रह जाये वह ईमान वाला नहीं है। (बेहक़ी)

१६. जो शख्स किसी ज़ालिम को ज़ुल्म करते हुये उसका साथ दे वह इस्लाम से निकल गया। (बेहक़ी)

१७. जिसने लोगों को दिखाने के लिये नमाज़ पढ़ी या रोज़ा रखा या खेरात दिया तो उसने शिर्क किया। (अहमद)

१८. मुनाफिक़ है वह शख्स जो अमानत में ख़यानत करे बोले तो झूठ बोले, वादा करे तो उसे तोड़ दे और लड़े तो गाली गलोज पर उतर आये। (बुखारी)

१९. झूठी गवाही देना गुनाह कबीरा है। (अहमद)

२०. जो जिस्म हराम कमाई से पला हो उसके लिये दोज़ख की आग ही बेहतर है वह जन्नत में नहीं जा सकता। (अहमद)

२१. एक शख्स ६० बरस तक अल्लाह की इबादत करता है और मरते वक्त एक वसीअत में हक़दार का हक मारकर अपने आपको दोज़ख क पात्र बना लेता है। (अहमद)

२२. अपनी औलाद के साथ शफ़क़त और मेहरबानी का बर्ताव करे और उनकी अच्छी से अच्छी तर्बियत करे। (इब्ने माजा)

२३. उस बेटी की सरपरस्ती करना सबसे बड़ा सदक़ा है जो तेरे पास लौटा दी गयी हो और तुम्हारे अलावा उसके लिये कोई भी कमाने वाला नहीं हो। (इब्ने माजा)

२४. मैं और यतीम की सरपरस्ती करने वाला दूसरे बेसहारा लोगों की सरपरस्ती करने वाला दोनों जन्नत में आस-पास रहेगें। (मुस्लिम)

२५. मुसलमान, मुसलमान का भाई है वह उसको बर्बादी से बचाता है और उसकी हिफ़ाज़त करता है और उसका मददगार होता है। (मिशकात)

२६. जब कोई चीज़ किसी को बेचो और उसमें कोई कमी हो तो उसको साफ-साफ बता दो। (इब्ने माजा)

२७. जानवरों के चेहरों को न दाग़ो और उनके चेहरों पर मत मारो। (तिरमिज़ी)

२८. मज़दूर का पसीना सूखने से पहले उसकी मज़दूरी दे दो। (इब्ने माजा)

२९. लानत है सूद खाने वाले पर, सूद खिलाने वाले पर, सूदी लेनदेन के गवाहों पर तथा सूदी लेने-देन की दस्तावेज़ लिखने वाले पर। (बुखारी)

३०. रिश्वत देने और रिश्वत लेने वाले पर अल्लाह की लानत है। (बुखारी)

३१. तुम दीनदार औरत से शादी करो, तुम्हारा भला हो। (बुखारी)

३२. सबसे बुरी दावत वह है जिसने अमीरों को बुलाया जाये और गरीबों को नज़र अन्दाज़ कर दिया जाये। (बुखारी)

३३. जिसकी जवानी बुराइयों से सुरक्षित रही वह जन्नत का हकदार है।

३४. ताकतवर वह नहीं है जो कुश्ती में दूसरों को पछाड़ दे, असल ताक़तवर वह है जो गुस्से की हालत में अपने ऊपर काबू रखे। (बुखारी)

३५. ग़ीबत, (पीठ पीछे बुराई करना) ज़िना से भी ज़्यादा बड़ा जुर्म है। (मिशकात)

३६. तुम में सबसे अच्छा व्यक्ति वह है जिसका अखलाक़ सबसे अच्छा हो। (बुखारी)

३७. अल्लाह के नज़दीक सबसे ज़्यादा बुरा आदमी वह है जो हमेशा लड़ने-झगड़ने वाला हो। (बुखारी)

३८. मज़दूर की मज़दूरी पसीना सूखने से पहले अदा करो। (इब्ने माजा)

३९. भूखे को खाना खिलाओ, बीमार को देखने जाओ और क़ैदी को छुड़ाओ। (बुखारी)

४०. अल्लाह तुम्हारी सूरतों और तुम्हारे माल को नहीं देखता बल्कि तुम्हारे दिल और तुम्हारे आमाल को देखता है। (मुस्लिम)

४१. जो शख्स नाहक किसी की ज़मीन पर कब्ज़ा करेगा क़ियामत के दिन उसको सात ज़मीनों में धंसा दिया जायेगा। (बुखारी)

४२. बदगुमानी से बचो, क्योंकि बदगुमानी बदतरीन झूठ है, लोगों में अैब तलाश न करो, टोह न लगाओ, एक दूसरे से हसद (जलन) न करो और न आपस में बुग्ज़ रखो। (बुखारी)

मौलाना माहिरुल क़ादरी रह०

नअत शरीफ़

कुछ कुफ्र ने फितने फैलाए कुछ ज़ुल्म ने शोले भड़काए। * सीनो में अदावत जाग उठी इन्सान से इन्सां टकराए।

पामाल किया बरबाद किया कमज़ोरों को ताक़त वालों ने। * जब ज़ुल्म व सितम हद से गुज़रे तशरीफ मुहम्मद ले आए।

रहमत की घटायें लहराईं दुनिया की उम्मीदें बर आयीं। * इकराम व अता की बारिश की इखलाक के मोती बरसाये।

तहज़ीब की शमअें रोशन कीं ऊँटों को चराने वालों ने। * कांटों को गुलों की क़ीमत दी ज़र्रों के मुकद्दर चमकाये।

अल्लाह से रिश्ते को जोड़ा बातिल के तिलिस्मों को तोड़ा। * खुद वक्त के धारों को मोड़ा तूफां में सफीने तैराये।

तलवार भी दी क़ुरआं भी दिया दुनिया भी अता की उकबा भी * मरने को शहादत फरमाया जीने के तरीक़े समझाये।

मज़ललूमों की फरियाद सुनी मजबूरों की ग़मख्वारी की। * ज़ख्मों पे खुनक मर्हम रख्खा बेचैन दिलों के काम आये।

औरत को हया की चादर दी इस्मत का ग़ाज़ा भी बख्शा। * शीशों में नज़ाकत पैदा की किरदार के जौहर चमकाये।

तौहीद का धारा रुक न सका इस्लाम का पर्चम झुक न सका। * कुफ्फार बहुत कुछ झुंझलाये शैतां ने हज़ारों बल खाये।

ऐ नामे मुहम्मद सल्ले अला माहिर के लिये तो सब कुछ है।

होंटों पे तबस्सुम भी आया आँखों मे भी आँसू भर आये।

दरुद व सलाम

सलाम उस पर कि जिसने बेकसों की दस्तगीरी की,
सलाम उस पर कि जिसने बादशाहों में फ़क़ीरी की,
सलाम उस पर कि इसरारे मोहब्बत जिसने समझाये,
सलाम उस पर कि जिसने ज़ख्म खाकर फूल बरसाये,
सलाम उस पर कि जिसने खूँ के प्यासों को कबायें दी,
सलाम उस पर कि जिसने गालियाँ सुनकर दुआयें दीं,
सलाम उसपर वतन के लोग जिसको तंग करते थे,
सलाम उस पर कि घर वाले भी जिससे जंग करते थे,
सलाम उस पर कि जिसके घर में चांदी थी, न सोना था,
सलाम उस पर कि टूटा बोरिया जिसका बिछौना था,
सलाम उस पर जो उम्मत के लिये रातों को रोता था,
सलाम उस पर जो फर्शे ख़ाक़ पर जाड़े में सोता था,
सलाम उस पर कि जिसने बे करारों को सुकूँ बख्शा,
सलाम उस जाने रहमत पर चचा का जिसने खूँ बख्शा,
सलाम उस पर कि जिसकी चाँद तारों ने गवाही दी,
सलाम उस पर कि जिसकी संग पारों ने गवाही दी,
सलाम उस पर कि जिसने ज़िन्दगी का राज़ समझाया,
सलाम उस पर कि जो खुद बद्र के मैदान में आया,
सलाम उस पर कि जिसका नाम लेकर उसके शैदाई,
उलट देते हैं तख्ते कैसरीयत औजे दाराई,
सलाम उस पर कि जिसका नाम गोया इस्म आज़म है,
सलाम उस पर कि सारे अंबिया में जो मुकर्रम है।